स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

रामानुजन

चित्रः भगत सिंह

श्रीनिवास आयंगार रामानुजन प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ और विद्वान थे। इन्होंने विशुद्ध गणित की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ली थी। इसके बावजूद गणितीय विश्लेषण, संख्या सिद्धांत (नम्बर थ्योरी), अनन्त श्रृंखला और सतत् भिन्न के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिए हैं।

रामानुजन का जन्म 22 दिसम्बर 1887 को इरोड, तमिलनाडु में हुआ था। गणित से इनका औपचारिक परिचय 10 वर्ष की उम्र में हुआ। तभी से एस.एल. लोनी की एडवांस्ड ट्रिग्नामेट्री जैसी किताबों का अध्ययन शुरू कर दिया और उस पर 13 वर्ष की उम्र में दक्षता हासिल कर ली। इन्होंने अपनी प्रमेय भी उस समय ही खोज ली थी। स्कूल के दिनों में ही गणित के प्रति इनमें अद्वितीय क्षमताएं दिखाई देने लगी थीं जिसकी पुष्टि पुरस्कारों और प्रशंसाओं से होती है। 17 वर्ष की उम्र में ही रामानुजन ने बरनौली नम्बर और यूलर मैस्केरोमी कांस्टेंट पर स्वयं के प्रयोग शुरू कर दिए।

कुम्भकोणम कॉलेज में आगे की पढ़ाई के लिए रामानुजन को छात्रवृत्ति मिली किंतु गणित के अतिरिक्त अन्य विषयों में उत्तीर्ण न हो पाने के कारण उन्हें यह मौका गवाना पड़ा। 1912-13 में रामानुजन ने अपनी प्रमेय का नमूना कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के 3 विद्वानों को भेजा जिसमें से जी.एच. हार्डी ने इनकी विशेष प्रतिभा को पहचाना और कैम्ब्रिज आकर उनके साथ काम करने के लिए आमंत्रित किया। रामानुजन रॉयल सोसायटी और ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज के फेलो बने। कुपोषण और लीवर संक्रमण के चलते मात्र 32 वर्ष की उम्र में 26 अप्रैल 1920 को रामानुजन का देहावसान हो गया।

रामानुजन ने लगभग 3900 प्रमेय प्रस्तावित किए थे जिनमें से ज़्यादातर आज मान्य हैं। रामानुजन प्राइम और रामानुजन थीटा फंक्शन ने तो आगे बड़े शोध के रास्ते खोले। रामानुजन के सूत्रों का उपयोग क्रिस्टलोग्राफी और स्ट्रिंग थ्योरी में भी हुआ है।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी